

पाठ 21 अध्याय 21

निर्गमन का अध्याय 21 यहोवा के इन सरल और सीधे शब्दों से शुरू होता है ये वे नियम हैं जो तुम्हें उनके सामने प्रस्तुत करने हैं।

अब खैर, शायद इतना आसान नहीं है; निर्गमन 21 उन अध्यायों में से एक है जिसे बहुत सावधानी से देखा जाना चाहिए क्योंकि कुछ सूक्ष्म विचार और धारणाएँ प्रस्तुत की गई हैं जो इसके बाद आने वाली हर चीज़ को बहुत प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए, इसे पढ़ने से पहले, हम इस पूरे पाठ में इस बात पर चर्चा करने जा रहे हैं कि हमें क्या देखना चाहिए।

सूक्ष्मताएँ अध्याय 21 के पहले शब्द से ही शुरू होती हैं: मूल इब्रानी में यह शब्द वे **एलेह** है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "और ये हैं"; मुख्य शब्द है **"और"**। उस एक छोटे से शब्द "अब" को "और" से बदलना या कुछ संस्करणों में "और" शब्द को फिर से जोड़ना क्यों महत्वपूर्ण है जहाँ यह गायब है? क्योंकि जैसा कि रब्बी इश्माएल मेखिल्टा में कहते हैं, इब्रानी में वे-एलेह शब्द हमेशा एक जोड़ने वाला शब्द होता है। यानी, यह इंगित करता है कि जो कहा जाने वाला है वह **अभी जो** कहा गया है उसका एक विस्तार है। जो कहा जाने वाला है उसका संदर्भ **"वे-एलेह"** शब्द से ठीक पहले जो आया है, उसमें सेट किया गया है।

हमने इस बारे में पहले भी बात की है और मैं इसे दोहराना नहीं चाहता, सिवाय इसके कि आपको याद दिला दूँ कि पवित्रशास्त्र पुराने नियम और नए नियम, अध्याय और पद्य में रुकावट और चिह्नों के साथ नहीं लिखे गए थे। यह बाइबिल लिखे जाने के बहुत बाद की बात है, 13वीं शताब्दी ई. में, जब कैंटरबरी के आर्कबिशप (स्टीफन लैंगटन) ने बाइबिल को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर अध्ययन को आसान बनाने का फायदा देखा। और सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए यह अध्यायों और पद्यों की उनकी प्रणाली थी जो आज भी उपयोग में है। लगभग 200 साल बाद एक रब्बी ने कुछ ऐसा ही किया (लेकिन केवल पुराने नियम के लिए) क्योंकि उसे लगा कि बिशप लैंगटन के अध्याय और पद्य चिह्नों ने इब्रानी के प्रवाह को बर्बाद कर दिया है, और यहूदी यह अच्छी तरह जानते थे। इसलिए, आपके पास बाइबिल के जिस संस्करण पर निर्भर करता है, हो सकता है कि आपके पास पुराने नियम के कुछ अध्याय अन्य संस्करणों की तुलना में लंबे या छोटे हों, और कुछ पद्यों की गिनती अन्य संस्करणों की तरह न हो।

मुद्दा यह है कि अध्याय और पद चिह्न कृत्रिम और मनमाने हैं। हमारे सामने जो मामला है, वह इसका एक आदर्श उदाहरण है। हमने अभी-अभी निर्गमन 20 की 10 आज्ञाओं का अध्ययन समाप्त किया है, और अब हमें अध्याय 21 की शुरुआत में यह कथन मिलता है कि **"ये वे नियम हैं जिन्हें आपको उनके सामने प्रस्तुत करना है।"** यह सामान्य गैर-यहूदी ईसाई आधार रहा है कि अध्याय 21 के उन शुरुआती शब्दों के कारण निर्गमन 20 (10 आज्ञाएँ) में जो मौजूद है, वह अध्याय 21 में शुरू होने वाली बातों से पूरी तरह से अलग है। यहूदी कानून बनाने वाले नियम और नियम; निर्गमन 20 का संदर्भ समाप्त हो गया है, और अध्याय 21 के शुरुआती शब्दों के साथ एक नया संदर्भ शुरू होता है। यह गलत दृष्टिकोण है जिसने चर्च को सदियों से, किसी तरह 10 आज्ञाओं को तोरह

के अन्य सभी नियमों और नियमों से अलग करने की अनुमति दी है। यानी, हमारे पास एक चर्च है जो कहता है कि तोरह और कानून को खत्म कर दिया गया है, लेकिन उसी समय 10 आज्ञाओं की निरंतरता को वैध ठहराता है। फिर भी हम देखते हैं कि वास्तव में 10 आज्ञाएँ स्पष्ट रूप से और शाब्दिक रूप से पहले 10 कानून हैं, भले ही वे एक ही समय में महान सिद्धांत हैं जिनके तहत अन्य सभी कानून बनाए जाएँगे। यह हमारे संविधान की प्रस्तावना की तरह है, प्रस्तावना संविधान से अलग एक अलग विचार प्रक्रिया वाला एक अलग दस्तावेज़ नहीं है। बल्कि, प्रस्तावना संविधान के शुरुआती शब्द हैं, और यह बुनियादी संदर्भ और सिद्धांत निर्धारित करती है जिसके द्वारा इसके बाद आने वाली हर चीज़ को अवश्य ही बनाए रखा जाना चाहिए।

आइए निर्गमन 21 की आरंभिक पद में निहित अगले महत्वपूर्ण बिंदु पर चलते हैं, और यह शब्द “नियम” से संबंधित है जो कि सबसे आम तौर पर वहाँ पाया जाता है। यदि आप बाइबिल के एक संस्करण से दूसरे संस्करण को देखें, तो “नियम” शब्द के स्थान पर आपको कानून, या अध्यादेश, या निर्णय, या नियम या कानून शब्द मिल सकते हैं। और हमारे आधुनिक सोच के तरीके में इन सभी का लगभग एक ही अर्थ है कि जो पालन किया जाना है वह आचरण का एक लिखित कानूनी कोड है, इस्राएल के समुदाय के लिए 613 कानूनों का एक नागरिक कोड जिसे अक्सर “कानून” के रूप में संदर्भित किया जाता है।

मूल इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद आम तौर पर कानून, नियम या निर्णय के रूप में किया जाता है, वह है **मिशपत** यानी, मूल इब्रानी शब्द **मिशपत** को पद 1 में डालने से यह इस तरह से लिखा जाता है “अब ये वे मिशपत हैं जिन्हें तुम्हें उनके सामने पेश करना है (अर्थात् इस्राएल) ” इसलिए, परमेश्वर ने पद 1 के बाद आने वाली सभी चीज़ों को “**मिशपत**” के रूप में वर्णित किया है। हालाँकि इस नागरिक संहिता को लगभग सार्वभौमिक रूप से “कानून” के रूप में संदर्भित किया जाता है, लेकिन “कानून” शब्द जैसा कि हम कानून के बारे में सोचते हैं, वह **मिशपत** का अर्थ नहीं है।

यह इस शब्द **मिशपत** का महत्वपूर्ण अर्थ है, और एक अन्य इब्रानी शब्द जो अक्सर इसके साथ आता है, “**सेदेक**”, जिसकी हम आज जाँच करने में कुछ समय बिताने जा रहे हैं क्योंकि **मिशपत** और **सेदेक** में कुछ शक्तिशाली, दिव्य अवधारणाएँ हैं जिन्हें ईसाई पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं। यह गलतफहमी, हमेशा मौजूद यहूदी विरोधी पूर्वाग्रह के साथ मिलकर जो चर्च में अपनी स्थापना के बाद से ही व्यावहारिक रूप से अंतर्निहित है, ने पुराने नियम के बारे में एक निरंतर नकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म दिया है, जो इस बारे में हमारी धारणाओं को गलत तरीके से रंग देता है कि तोरह मसीह की वाचा से कैसे संबंधित है।

इससे पहले कि हम **मिशपत** और **सेदेक** की विशिष्ट इब्रानी अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझ सकें, हमें पहले प्राचीन इब्रानी मन के कुछ बुनियादी आधारों को समझना होगा क्योंकि वे गैर—यहूदी ईसाइयों के सोचने के तरीके के लगभग विपरीत हैं। वास्तव में, यदि आप जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ उस पर ध्यान से ध्यान देंगे, तो आपको सामान्य रूप से नया नियम और विशेष रूप से रोमियों की पुस्तक के बारे में कहीं अधिक बेहतर समझ होगी।

मैं एक (आशा से) अति सरलीकृत उदाहरण का उपयोग करके शुरू करूँगा: आधुनिक समय के बहुत से विश्वासियों की मानसिकता के बारे में अक्सर उद्धृत की जाने वाली ईसाई कहावत है कि 'हम इतने स्वर्गीय दिमाग वाले हैं कि हम सांसारिक रूप से अच्छे नहीं हैं। अर्थात्, कुछ विश्वासी इस बात को लेकर इतने चिंतित हैं कि एक बार जब हम अनंत काल में प्रवेश करेंगे और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ रहना शुरू करेंगे तो क्या होगा कि पृथ्वी पर हमारा समय गौण हो जाता है हमारा भौतिक जीवन लगभग अप्रासंगिक हो जाता है, हमारे साथी मनुष्य के प्रति अच्छे कर्म और कर्तव्य अलग हो जाते हैं, हम बस आगे क्या होने वाला है, इसकी तुलना में प्रतीक्षा अवधि में होते हैं।

दूसरी ओर, पुराने नियम के इब्रानियों ने स्वर्ग या अनंत काल पर बहुत कम ध्यान दिया, कम से कम इस दृष्टि से कि यह उस स्थान से संबंधित था जहाँ वे किसी दिन अस्तित्व में आ सकते थे, इसके बजाय, उनका सारा ध्यान, विशेष रूप से यहोवा के साथ उनके रिश्ते के संबंध में, उनके सांसारिक जीवन पर केंद्रित था.....उन सब पर जो उनके मरने से पहले हुआ था।

प्राचीन इब्रानियों के ऐसा महसूस करने के पीछे बहुत अच्छे कारण थे। आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि पुराने नियम में हमें इस बारे में लगभग कुछ भी नहीं मिलेगा कि किसी के मरने के बाद क्या होता है। पुराने नियम में मृत्यु के बाद जीवन की संभावना पर बहुत कम चर्चा की गई है। एक प्रश्न जो मुझसे लगातार पूछा जाता है, और मुझे यकीन है कि अन्य बाइबिल शिक्षकों को भी इसी प्रश्न का सामना करना पड़ता है, वह है 'पुराने नियम के अनुसार रहने वाले लोगों, इब्रानी और अन्य लोगों का क्या हुआ, जो मर गए', क्योंकि मसीह का आना अभी बाकी था?

वैसे तो मृत्यु और परलोक का विषय हम ईसाइयों के लिए सर्वोच्च रुचि का विषय है, लेकिन पुराने नियम के इब्रानियों के लिए यह इतना महत्वपूर्ण नहीं था; और यह तथ्य इस बात से बहुत जुड़ा है कि इब्रानियों ने माउंट सिनाई पर परमेश्वर द्वारा बताई गई बातों और तोरह में लिखी गई बातों को किस तरह से देखा। सामान्य तौर पर प्राचीन इब्रानी दृष्टिकोण यह था कि मृत्यु अस्तित्व का एक प्राकृतिक अंत है, जैसे जन्म एक प्राकृतिक शुरुआत है। अब, वे निश्चित रूप से अब मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं करते थे, जैसा कि हम करते हैं, न ही वे इसे केवल तथ्यात्मक या आकस्मिक रूप से लेते थे। लेकिन, उन्होंने इस बारे में भी अधिक नहीं सोचा कि मृत्यु के बाद क्या होगा, यदि कुछ हुआ भी। मृत्यु के संबंध में उनकी मुख्य चिंता यह थी कि वे तब तक मरना नहीं चाहते थे जब तक कि वे एक प्राकृतिक जीवन अवधि की पूरी संभव अवधि नहीं जी लेते। उनके डर का मृत्यु के बाद क्या होगा, इससे कोई लेना-देना नहीं था; बल्कि यह "अलग-थलग" होने से बचने के लिए था, कट-ऑफ बाइबिल में समय से पहले मृत्यु के लिए प्रयुक्त शब्द है, जो बीमारी, युद्ध में मारे जाने, दुर्घटना, हत्या या यहाँ तक कि परमेश्वर के न्याय के कारण भी हो सकता है।

और, दुष्टों की नियति भी "काट दिया जाना" ही थी। यानी, उनकी दुष्टता को एक छोटे जीवन से पुरस्कृत किया जाना था। इसके विपरीत, जब हम बाइबिल के वाक्यांश को सुनते हैं, "उन्होंने अपनी अंतिम साँस ली और अपने पिताओं के पास जा मिले", तो इसका सीधा सा मतलब है कि वह व्यक्ति एक परिपक्व वृद्धावस्था तक

जीया था, जिसकी उन्हें वास्तव में उम्मीद थी। लेकिन, यह भी संकेत देता है कि उन्होंने पूर्वजों की पूजा के अवशेषों को पकड़ रखा था और उनके अस्तित्व का कुछ सार, किसी अनिर्धारित तरीके से, उनके मरने के बाद उनके पूर्वजों के साथ संवाद कर सकता है।

इसलिए, समय से पहले मृत्यु को आम तौर पर अधर्मी जीवन जीने के परिणाम, दंड के रूप में देखा जाता था... यानी, कानून की अवज्ञा, जिसमें पूरी तरह से दुष्टता भी शामिल है। पाप के लिए (शारीरिक मृत्यु से परे) कोई और परिणाम नहीं सोचा गया था, क्योंकि आम तौर पर, मृत्यु को अस्तित्व के अंत के रूप में देखा जाता था। प्राचीन पुराना नियम इब्रानी मन के लिए, शीओल मृतकों का स्थान था। इसे अक्सर पादरी और बाइबिल शिक्षकों द्वारा नया नियम शब्द हेडिस के पुराना नियम संस्करण के रूप में वर्णित किया गया है, जिसे आमतौर पर नरक माना जाता है। अब, एक धार्मिक दृष्टिकोण से, यह निश्चित रूप से बहस योग्य है कि तकनीकी रूप से, वे सही हो सकते हैं। हालाँकि, प्राचीन इब्रानियों ने वास्तव में इसके बारे में क्या सोचा था, इस दृष्टिकोण से, यह गलत है। पुराना नियम इब्रानियों के लिए, शीओल मूल रूप से कब्र थी।

मृत्यु और कब्र उनके लिए एक रहस्य थी, और जबकि इस बात का थोड़ा सा संकेत है कि किसी अमूर्त तरीके से मृत्यु के बाद "कुछ" हो सकता है, उन्हें कोई सुराग नहीं था कि वह क्या था। हालाँकि, बेबीलोन के बाद, मान लें कि 550 ईसा पूर्व और उसके बाद, इब्रानियों ने अंततः कुछ विचार विकसित किए कि शायद मृत्यु के बाद एक अलग तरह का अस्तित्व शुरू हुआ, लेकिन यह निश्चित रूप से उस जीवन से बेहतर नहीं था जिसे उन्होंने छोड़ा था जो उनके मरने से पहले था। उनके बेजान शरीर के शेओल, उनकी कब्रों में प्रवेश करने के बाद क्या हुआ, इस बारे में उनके पास जो भी अस्पष्ट विचार थे, वे विचार पुराने नियम में छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखरे हुए हैं, और उन्हें एक साथ जोड़ना मुश्किल है। लेकिन, निश्चित रूप से, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में अनंत काल तक जीने या 'मरने पर स्वर्ग जाने' की कोई अवधारणा नहीं थी, वास्तव में, पुराने नियम में हम जो सामान्य विचार पाते हैं वह यह है कि शेओल, कब्र, मृतकों को यहोवा से स्थायी रूप से अलग करती है उन "अलगाव" विचारों ने कुछ ईसाई शिक्षकों को यह दावा करने के लिए प्रेरित किया है कि शेओल नरक का पुराने नियम का संस्करण था, एक ऐसा स्थान जहाँ अधर्मियों के लिए सज़ा, और मुझे लगता है कि वे गलत हैं, क्योंकि पुराने नियम में कहा गया है कि सभी लोग अधोलोक में उतरते हैं जो, एक बार फिर, मूल रूप से एक अवधारणा है जिसके अनुसार सभी मर जाते हैं और सभी कब्र में चले जाते हैं। इसलिए, अधोलोक को सभी मानव जाति के लिए महान सामान्य विभाजक के रूप में देखा गया धार्मिक या दुष्ट, सभी लोग मर गए और उनका अस्तित्व समाप्त हो गया। इसलिए, जो मायने रखता था, वह था जीवन।

अब, यह प्राचीन दुनिया के बाकी हिस्सों की मान्यताओं से बिल्कुल अलग है। इब्रानी लोगों के अलावा, पुरातत्व द्वारा खोजी गई लगभग हर संस्कृति में मृतकों का कोई न कोई व्यापक पंथ था। हम सभी इस बात से भली-भांति परिचित हैं कि महान पिरामिडों का निर्माण फिरोन के लिए एक सुरक्षात्मक स्थान के रूप में किया गया था, ताकि वे शांति और आराम से अपना जीवन जी सकें। एक पूरी तरह से विकसित अंडरवर्ल्ड मिथक,

मृतकों की आत्मा की दुनिया, यहाँ तक कि पुनर्जन्म में विश्वास भी पूरी प्राचीन दुनिया के लिए मानक संचालन प्रक्रिया थी, पुराना नियम इब्रानी लोगों को छोड़कर।

इसलिए, पुराने इब्रानी के लिए जो मायने रखता था, वह यह था कि उसके जीवनकाल में क्या हुआ था। उनका मानना था कि जीवन, भौतिक जीवन, आपके अस्तित्व की शुरुआत और जाहिर तौर पर अंत था और, अब यही कुंजी है। परमेश्वर की सेवा करने का आपका एकमात्र समय। हालाँकि, क्रूस के समय तक, मृत्यु और उसके बाद के जीवन पर बहुत सारे इब्रानी सिद्धांत और परंपराएँ विकसित हो चुकी थीं, यहाँ तक कि पुनरुत्थान की अवधारणा भी, इब्रानी में, शब्द जिसका इस्तेमाल मृत्यु के बाद के जीवन और कभी-कभी मसीहा के आने के बाद एक नई दुनिया दोनों को शामिल करने के लिए किया जाता था, वह था **“ओलम हबा”** (अंग्रेजी में, “आने वाला संसार”)। हालाँकि हमें पुराने जमाने के धर्मग्रंथों में इस विषय पर ज़्यादा जानकारी नहीं मिलेगी, लेकिन **हम इसे** उन किताबों में पाएँगे जिन्हें हम प्रोटेस्टेंट लोगों ने सिर्फ दो सौ साल पहले बाइबिल से हटा दिया था, अपोक्रिफा। यह सही है कि बाइबिल में कई अन्य किताबें भी शामिल थीं, लेकिन उन्हें प्रोटेस्टेंट चर्च ने हमारे क्रांतिकारी युद्ध और स्वतंत्रता की घोषणा के समय ही हटा दिया था।

अपोक्रिफा की पुस्तकें पुराने नियम के अंत से लेकर लगभग 400 ईसा पूर्व, नए नियम की शुरुआत तक फैली हुई हैं। और, जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, हम उन पुस्तकों में इस बात पर बहुत असहमति पाते हैं कि कई प्रभावशाली रब्बियों में से किसके पास मृत्यु और परलोक के बारे में उचित दृष्टिकोण था। इतनी असहमति क्यों? क्योंकि इन विचारों के स्रोत का पवित्रशास्त्र से बहुत कम लेना-देना था, और मनुष्यों के विचारों और दर्शन से कहीं ज़्यादा। लेकिन फिर भी हमें यह समझना चाहिए कि परलोक अभी भी इस्राएलियों के मन और उद्देश्यों में केवल एक छोटी सी जगह रखता था, सिवाय अत्यधिक उत्पीड़न के समय के, जैसे कि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में एंटिओकस एपिफेनीज़ के अधीन, और मसीह के समय से **पहले**, उसके दौरान और उसके बाद रोमनों के अधीन। पुराने नियम के इब्रानियों के लिए यहाँ और अभी भी सब कुछ था और मृत्यु और उसके बाद के बारे में उनकी रुचि और कुछ धर्मशास्त्र विकसित होने के बाद भी, यह अभी भी उनके विचारों पर हावी नहीं हुआ या सामान्य तौर पर उनके जीवन को निर्देशित नहीं किया। और, यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि ईसा के जन्म से कुछ समय पहले विकसित हुई मृत्यु और परलोक की धारणाएँ आमतौर पर बाइबिल पर आधारित नहीं थीं। वे नव विकसित मानव निर्मित परंपराओं पर आधारित थीं, और ग्रीक विचारों से काफी प्रभावित थीं, जो अब यहूदी धर्म के अधिकांश हिस्सों में व्यापक हो गई थी।

अब, जो मैंने अभी आपको बताया है, उसके आधार पर, यदि आप पुराने नियम के बाइबिल के समय में इब्रानी थे, विशेष रूप से मूसा के समय से, तो आप अपना सांसारिक जीवन कैसे जीते? एक ऐसा जीवन जो, जहाँ तक सभी जानते हैं, कब्र पर समाप्त होता है और आगे कुछ भी वास्तविक विचार नहीं होता। यदि आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो आप शायद यह सुनिश्चित करेंगे कि आपके जीवित रहने के 70 या 80 वर्ष यहोवा के साथ आपके रिश्ते के इर्द-गिर्द घूमें, और यदि आप यहोवा के प्रभुत्व के बारे में बहुत गंभीर थे, तो आप परमेश्वर के सामने धार्मिक होने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे क्योंकि एक बार जब आप मर जाते हैं तो आप

मानते हैं कि आपका यहोवा के साथ रिश्ता हमेशा के लिए खत्म हो गया। अब आपके पास परमेश्वर को खुश करने या उससे संवाद करने का कोई मौका नहीं था। धर्मी होने और यहोवा को खुश करने का मतलब था उसके प्रति आज्ञाकारी होना, वास्तव में, यही बात हमें 10 आज्ञाओं में बताई गई थी। इसलिए प्राचीन इब्रानी लोग अपने जीवन के हर चरण में, अपने दैनिक कार्यों में यहोवा को खुश करने के लिए लगन से काम करते थे। यही उनका लक्ष्य और उनके जीवन का उद्देश्य था।

अब, उस प्राचीन इब्रानी मानसिकता की तुलना हमारे आधुनिक ईसाई दृष्टिकोण से करें। मुझे लगता है कि यह कहना उचित है कि शायद आज हमारा प्राथमिक लक्ष्य, विश्वासियों के रूप में, शाश्वत सुरक्षा प्राप्त करना है, यानी, हमें स्पष्ट रूप से आश्वस्त किया जाता है कि हमारे पास एक परलोक होगा, और यह हमारे सांसारिक जीवन से कहीं बेहतर होगा, और यह हमेशा के लिए है, और यह परमेश्वर की उपस्थिति में होगा। इसलिए, ईसाई परमेश्वर के साथ एक अनंत भविष्य की आशा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो कि हमारे द्वारा जीवित रहते हुए लिए गए एक महत्वपूर्ण निर्णय के लिए एक पुरस्कार के रूप में है यीशु को परमेश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना। दूसरी ओर, प्राचीन इब्रानी मुख्य रूप से वर्तमान को देखते थे क्योंकि, आम तौर पर, उन्हें लगता था कि वर्तमान जीवन ही सब कुछ है। जो भी पुरस्कार उन्हें यहोवा से मिल सकता था, वह उनके जीवनकाल के दौरान, उनकी दैनिक आज्ञाकारिता और निर्णयों के आधार पर प्राप्त हुआ था, और सबसे ठोस पुरस्कार एक लंबा जीवन जीना था।

क्या आप देख सकते हैं कि जीवन, मृत्यु और परलोक के बारे में ईसाइयों के ये दो अलग-अलग विचार, पुराने नियम के बाइबिल के इब्रानियों के विचारों से अलग हैं, और ये इस बात पर बहुत बड़ा प्रभाव डालते हैं कि हम में से प्रत्येक परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को कैसे स्वीकार करता है; या यहाँ तक कि हम अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति अपनी पूर्ण आज्ञाकारिता को कितना महत्वपूर्ण या महत्वहीन मानते हैं? यह परमेश्वर के सिद्धांतों और उसके वचन के प्रति हमारे द्वारा दिए जाने वाले अर्थ पर भी बहुत बड़ा अंतर डालता है।

ये दो अलग-अलग दृष्टिकोण इब्रानियों और ईसाइयों के उद्धार के बारे में सोचने के तरीके पर भी लागू होते हैं।

आज भी, जब आप किसी यहूदी को “उद्धार” कहते हैं, तो इसका मतलब कुछ और होता है, जो हम सोचते हैं कि उद्धार में शामिल है फिर से, यह नहीं कि आप इसे कैसे प्राप्त करते हैं, बल्कि यह कि यह क्या है। जबकि यह सर्वसम्मति से नहीं है, सामान्य तौर पर इब्रानियों ने सोचा, और सोचते रहे, कि उद्धार उनके पूर्वजों के माध्यम से एक पूर्ण तथ्य है। अर्थात्, परमेश्वर ने अपनी सारी कृपा और दया में, अब्राहम इसहाक और याकूब के माध्यम से अलग-अलग समूह, बचाए गए लोगों की स्थापना की, और इसलिए यदि, परमेश्वर की कृपा से, आप उस अलग-अलग समूह इब्रानियों, इस्राएलियों (कभी-कभी बाइबिल में अब्राहम के वंश के रूप में व्यक्त) के सदस्य होने के लिए भाग्यशाली थे, तो आप बचाए गए थे। किससे बचाए गए? मूर्तिपूजक न होने से।

अब्राहम की वाचा द्वारा पहली बार अलग किए गए लोगों की स्थापना के 600 साल बाद यहोवा की ओर से एक नई वाचा, मूसा की वाचा का आगमन हुआ। मूसा की वाचा पर, उस नई वाचा के प्रति आज्ञाकारी होने का व्यक्ति का इरादा, जिसे आम तौर पर व्यवस्था कहा जाता है। वही आपको अलग किए गए समूह में रखता था, आपको बचाए रखता था, आपको मूर्तिपूजक होने से बचाता था। इसलिए, प्राचीन इब्रानी के लिए बचाए जाने का मतलब था पहले उस समूह का सदस्य बनना जिसे परमेश्वर ने अपने विशेष लोगों, इस्राएलियों, इब्रानियों के रूप में अलग रखा था, और फिर व्यवस्था का पालन करने के लिए अपने समर्पण के माध्यम से समूह में बने रहना। एक इब्रानी के रूप में जन्म लेना, और व्यवस्था का पालन करने के माध्यम से मूसा की वाचा का हिस्सा बनना, ऐसा कहा जा सकता है कि आपका इनाम था। यानी बस परमेश्वर के लोगों का हिस्सा होना, इस्राएल का हिस्सा होना, उद्धार का मतलब था।

इससे ज़्यादा कुछ नहीं। पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को लिखने वालों की सोच के अनुसार, आपके जीवन के समाप्त होने के बाद किसी भी अतिरिक्त भविष्य के इनाम के बारे में सोचना उद्धार का हिस्सा नहीं था। पुनः, इसकी तुलना ईसाई दृष्टिकोण से करें कि मोक्ष मुख्यतः इस बात पर निर्भर करता है कि क्या घटित होता है।

हमारे मरने के बाद। हमारे लिए, उद्धार का मतलब इस वर्तमान जीवन में पापों की क्षमा, किसी और के किए गए काम (यीशु मसीह) के आधार पर धार्मिकता प्राप्त करना है, और इसके परिणामस्वरूप हमें यहोवा के साथ अनंत काल के लिए एक जीवन मिलता है। हमारा इनाम मुख्य रूप से भविष्य में, एक आत्मिक दुनिया में, हमारे मरने के बाद मिलता है।

इन सब बातों को पृष्ठभूमि के रूप में देखते हुए, शायद अब हम इस्राएलियों, उन प्राचीन इब्रानियों और उनके सभी वंशों के मन को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, जो पृथ्वी पर अपने छोटे से जीवन काल में तोरह के 613 नियमों का पालन करने की उनकी उत्कृष्ट इच्छा में थे। हम ईसाई जिस तरह की धार्मिकता की तलाश करते हैं, वह मुख्य रूप से हमें स्वर्ग में ले जाने के लिए है, जिस तरह की धार्मिकता की इब्रानियों ने आशा की थी, वह कुछ मायनों में, एक दिन प्रतिदिन का सांसारिक मुद्दा था, जिसका प्राथमिक पुरस्कार केवल यह जानना था कि आप आज्ञाकारी थे, और इसलिए यहोवा को प्रसन्न करते थे, और इस तरह उसके अलग-अलग लोगों का हिस्सा बने रहे।

इस तोरह क्लास में मेरे उद्देश्य और लक्ष्य का एक हिस्सा यह है कि यहोवा के वचन को आप तक उन लोगों की मानसिकता और संस्कृति के भीतर प्रकट करूँ जिन्हें परमेश्वर ने इसे सबसे पहले दिया था। उस मानसिकता के बाहर हमें बाइबिल में क्या चल रहा था और परमेश्वर ने हमें क्या सीखने के लिए कहा था, इस बारे में कुछ विकृत विचार मिलते हैं। तो जीवन, मृत्यु और आम तौर पर किसी भी मृत्यु के बाद के जीवन की अनुपस्थिति (और अगर कोई मृत्यु के बाद का जीवन था तो वह यहोवा से अलग था) के इस समग्र दृष्टिकोण ने पुराना नियम (ध्यान दें कि मैंने पुराना नियम कहा) इब्रानी अवधारणा को बहुत प्रभावित किया कि वास्तव में परमेश्वर का मिशपात और सेदेक जैसे आधारभूत शब्दों से क्या मतलब था, जिसने बदले में प्रभावित किया कि वे कैसे देखते थे कि व्यवस्था क्या थी, यह किसके लिए थी, और उन्हें इससे कैसे संबंधित होना था। और यह उससे

बहुत अलग था जिस तरह से ईसाइयों को इसे देखना सिखाया गया है। बल्कि, इसमें आज्ञाकारिता—धार्मिकता का दृष्टिकोण शामिल था, जो इस मान्यता से उपजा था कि यह यहोवा की कृपा थी जिसने इब्रानियों को उनके चुने हुए लोग बनाया और यह कि किसी भी व्यक्ति के लिए इब्रानी होना सौभाग्य की बात थी। यह कानूनवाद के उस मतलबी आरोप से बिल्कुल अलग है जिसे चर्च लगातार बाइबिल के इब्रानियों पर लगाता है।

अरे हाँ, परंपरा मानव निर्मित सिद्धांत ने मसीह के समय तक वास्तव में पानी को गंदा कर दिया था, और परिणामस्वरूप अधिकांश इब्रानियों ने सच्चे उद्धार की अपनी आवश्यकता और उन्हें बचाने के लिए भेजे गए व्यक्ति दोनों को स्वीकार कर दिया, और आज भी स्वीकार करते हैं। लेकिन, ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि उन्हें लगता था कि उनकी धार्मिकता के अपने तरीके ने उन्हें परमेश्वर के साथ अनंत जीवन दिलाया है। अधिकांश लोगों को नहीं लगता था कि ऐसी कोई संभावना भी मौजूद है, और जो कुछ लोग मानते थे कि अब्राहम और मूसा की वाचाओं के प्रति सच्चे बने रहने से उन्हें पहले से ही ऐसे भविष्य का आश्वासन मिल गया था और, वैसे: मानव निर्मित सिद्धांतों ने भी हमारे ईसाई जल को गंदा कर दिया है। तो आइए हम खुद को बहुत ऊँचा और शक्तिशाली न समझें, और उन प्राचीन इब्रानियों को आदिम और अज्ञानी कहकर उनका उपहास न करें।

अब, आइए देखें कि क्या हम यह निर्धारित करना शुरू कर सकते हैं कि उन दो महत्वपूर्ण और केंद्रीय शब्दों **मिशपत** और **सेदेक** का क्या अर्थ है। याद रखें, **मिशपत** वह है जिससे परमेश्वर तथाकथित नियमों के समूह को चित्रित करता है जिसे वह मूसा और इस्राएल को देने वाला था, जो निर्गमन 21 से शुरू होता है। अधिकांश समय **मिशपत** का अनुवाद हमारी बाइबिलों में “निर्णय या नियम के रूप में किया जाता है, और **सेदेक** का अनुवाद “धार्मिक” या “धार्मिकता” के रूप में किया जाता है। इसलिए हमारे पुराने नियम में, अधिकांश समय जब हम अंग्रेजी शब्द “निर्णय या नियम या न्याय” देखते हैं, तो अनुवाद किया जा रहा इब्रानी शब्द **मिशपत** का एक या दूसरा रूप होता है। जब हम पुराने नियम में “धार्मिक” या “धार्मिकता” देखते हैं तो जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद किया जा रहा है वह लगभग हमेशा **“सेदेक”** शब्द का एक रूप होता है।

अब, हम संभवतः पूरा सत्र आपस में इस बात पर विचार—विमर्श करने में बिता सकते हैं कि अंग्रेजी में “धार्मिकता” शब्द का हमारे लिए क्या अर्थ है। यानी, हममें से प्रत्येक इसे कैसे परिभाषित कर सकता है?

खैर, इससे वचने के लिए, मैं आपसे बस इतना कहना चाहता हूँ कि आधुनिक चर्च के माहौल में धार्मिकता, **सेदेक**, का मतलब “धर्मपरायणता, पवित्रता, शायद परमेश्वरीयता” है। ये सभी बहुत आध्यात्मिक शब्द हैं, यानी, बहुत आत्मा उन्मुख, जो कि आत्मा या हमारे शरीर की स्थिति के विपरीत है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि हम ईसाई अपने आत्मिक जीवन को अपने भौतिक जीवन से कुछ अलग, और अधिक महत्वपूर्ण और अधिक प्रभावशाली मानते हैं।

अब, प्राचीन इब्रानी मानसिकता के बारे में हमने जो सीखा है, उस पर वापस विचार करें। चूंकि वे अपने भौतिक जीवन, यहाँ और अभी के बारे में अधिक चिंतित थे, उनका मानना था कि कब्र से परे कुछ भी नहीं है, इसलिए वे अपने साथी मनुष्यों के साथ रोज़मर्रा की गतिविधियों और व्यवहार में परमेश्वर में अपने विश्वास को जीने के बारे में अधिक चिंतित थे। इसलिए “धार्मिकता” को हम ईसाइयों की तरह एक उच्च आध्यात्मिक लक्ष्य के

रूप में देखने के बजाय, उन्होंने इसे व्यक्तिगत व्यवहार और निर्णय लेने के रोज़मर्रा के व्यावहारिक मामले में देखा। और, इसलिए, प्राचीन इब्रानियों के लिए एक आदमी की धार्मिकता, उसका **सेदेक**, दूसरों के साथ अपने सभी व्यवहारों में निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होने के इर्द-गिर्द घूमता था अपने परिवार, अपने दोस्तों, अपने व्यापारिक सहयोगियों, अपने ग्राहकों, यहाँ तक कि अपने दुश्मनों के साथ भी। इसलिए नमूने का पुराना नियम इब्रानी के लिए धार्मिकता का मतलब अपने साथी मनुष्यों के साथ निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होना था। और उन्होंने कहाँ से सीखा कि निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होने का मानक क्या था? कानून। मूसा की वाचा। उनका इरादा अपने साथी मनुष्यों के साथ निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होना था, जैसा कि यहोवा ने तोरह में (मूसा के माध्यम से) लिखा था।

इसलिए जबकि ईसाई एक व्यक्ति की धार्मिकता को अमूर्त, आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति के रूप में देखते हैं, पुराने नियम के इब्रानी ने उसकी धार्मिकता को उसके निष्पक्ष और न्यायपूर्ण व्यवहार और रवैये में लपेटा हुआ देखा। ईसाई चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी पवित्र, आंतरिक स्थिति को देखे, जो मसीह में हमारी एकता के परिणामस्वरूप बनाई गई है, धार्मिक के रूप में, इब्रानी चाहते थे कि परमेश्वर उनकी निष्पक्ष और न्यायपूर्ण बाहरी गतिविधियों को धार्मिक रूप में देखे।

तो इनमें से कौन सा दृष्टिकोण विपरीत प्रतीत होता है, जो बाइबिल में वर्णित, ईश्वर द्वारा परिभाषित, धार्मिकता, **सेदेक** का उचित दृष्टिकोण है? क्या इब्रानियों का यह कहना सही था कि धार्मिकता हमारे साथी मनुष्यों के साथ हमारे निष्पक्ष व्यवहार में सन्निहित है? या वे गलत थे, और हम ईसाइयों का यह कहना सही है, क्योंकि धार्मिकता केवल हमारी आत्माओं की एक स्थिति है, जो मसीह द्वारा उत्पन्न होती है? खैर, वास्तव में, मुझे लगता है कि हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि दोनों सही हैं, और दोनों गलत हैं। क्योंकि परमेश्वर के पास धार्मिकता की एक परिभाषा है जो मनुष्य आधारित नहीं है, बल्कि परमेश्वर आधारित है। इसलिए आम तौर पर न तो इब्रानी और न ही ईसाई धर्म यह दावा कर सकते हैं कि वे परमेश्वर के धार्मिकता के दृष्टिकोण का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करते हैं, फिर भी प्रत्येक अपने कुछ तत्वों को प्रदर्शित करता है।

आइए हम **सेदेक** पर अपनी चर्चा को कुछ समय के लिए रोक दें और अपना ध्यान वापस इब्रानी शब्द “मिशपत” पर केंद्रित करें, क्योंकि जिसे लगभग सार्वभौमिक रूप से इब्रानी और गैर-यहूदी दोनों द्वारा कानून कहा जाता है, उसे यहोवा अपना **“मिशपत”** कहता है। तो वास्तव में इसका हमारे लिए क्या मतलब है?

विद्वान इस पर सदियों से विचार-विमर्श करते आ रहे हैं। मार्टिन लूथर भी **मिशपत** शब्द से मोहित थे, और, काफी दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने अक्सर इसका अनुवाद “परमेश्वर के वचन को बनाए रखना” के रूप में किया। अन्य समय में उन्होंने **मिशपत** का अनुवाद “न्यायपूर्वक करना” के रूप में किया। फिर भी यह पूरी तरह से संतोषजनक नहीं है, न ही यह शब्द के अर्थ को समाहित करता है, लेकिन हम करीब पहुँच रहे हैं। इसलिए, एक उदाहरण या चित्रण के रूप में, आइए अब्राहम के साथ एक घटना पर नज़र डालें, जो मुझे लगता है कि लूथर की **मिशपत** की परिभाषा को मान्य और शायद विस्तारित करती है, जो हमें सच्चाई के करीब ले जा रही है।

“क्योंकि मैंने (यहोवा ने) अपने आप को उस पर (अब्राहम पर) प्रकट किया है, ताकि वह अपने बच्चों और अपने घराने को जो उसके बाद रह जाएँगे आज्ञा दे कि वे **यहोवा के मार्ग पर बने रहें**, और वही करें जो **धर्म और न्याय का है**, और यहोवा अब्राहम के विषय में जो कुछ उसने उससे कहा है उसे पूरा करे।”

आइए इस वाक्यांश पर ध्यान दें, जो सही और न्यायसंगत है उसे करना; इब्रानी में, इसे “**सेदेक और मिशपत करना**” कहा जाता है। अहा; यहाँ हमारे पास पवित्रशास्त्र द्वारा पवित्रशास्त्र को परिभाषित करने का एक शानदार मामला है क्योंकि हमें “**सेदेक और मिशपत करना**” वाक्यांश से ठीक पहले आधे दर्जन शब्दों में बताया गया है कि इसका क्या मतलब है; इसका मतलब है, “**यहोवा के मार्ग पर चलना**”। तो, सेदेक और मिशपत करके, जो सही और न्यायसंगत है उसे करके, कोई व्यक्ति यहोवा के मार्ग पर चल रहा है, कम से कम अब्राहम के मामले में तो ऐसा ही है। और, यह लूथर के दृष्टिकोण से बहुत अच्छी तरह मेल खाता है।

आइए संक्षेप में देखें कि हम अब तक क्या जानते हैं: सेदेक और मिशपत में कम से कम आंशिक रूप से यहोवा के मार्ग का पालन करना शामिल है। यहोवा के मार्ग के बारे में मूसा की वाचा में मनुष्य को विस्तार से सिखाया गया है। और यहोवा के मार्ग को “न्यायपूर्ण” और “सही” के रूप में वर्णित किया गया है, जैसा कि धार्मिक रूप से होता है। फिर भी यहोवा के मार्ग को किसी भी तरह से कठोर, कठोर, निर्दयी आत्म-औचित्यपूर्ण कानून संहिता के रूप में वर्णित नहीं किया गया है, न ही यह नकारात्मक या दंडात्मक है।

अब इसे दूसरे संदर्भ में देखें; यदि हम भविष्यद्वक्ताओं यशायाह और मीका के बारे में पढ़ना शुरू करें तो हम पाएँगे कि “न्याय” शब्द का बहुत अधिक उपयोग किया गया है (लगभग 50 बार, आपके बाइबिल संस्करण के आधार पर)। मुझे नहीं लगता कि मैं यह कहने में बहुत आगे निकल जाऊँगा कि “न्याय” शब्द हमारे सोचने के तरीके में एक कठोर अर्थ रखता है। अर्थात्, क्रोध या दंड (यहाँ तक कि ईश्वरीय विनाश) बाइबिल के शब्द “न्याय” के लिए अच्छे पर्यायवाची हो सकते हैं। जबकि यह निश्चित रूप से एक सर्वसम्मत चर्च दृष्टिकोण नहीं है, यह आम तौर पर स्वीकृत विचारधारा है कि इब्रानी शास्त्रों में “न्याय” शब्द के बार-बार प्रकट होने के कारण, पुराने नियम में परमेश्वर के क्रोध के बारे में बताया गया है जबकि नए नियम में उनकी कृपा और दया के बारे में बताया गया है।

600 साल पहले जब बाइबिल का पहली बार अंग्रेजी में अनुवाद किया गया था (KJV से भी पहले) तो जजमेंट शब्द एक सौम्य और तटस्थ शब्द था। यानी, यह न तो विशेष रूप से नकारात्मक था और न ही सकारात्मक, न ही यह किसी कठोर या गंभीर बात का संकेत देता था। उन दिनों इसका मतलब यह था कि अगर कोई आपसे किसी चीज़ पर आपकी राय पूछे और आप जवाब दें, “ठीक है, मेरे विचार से, मैं ऐसा सोचता हूँ”। “मेरे विचार से” वाक्यांश से आपका मतलब निश्चित रूप से “मेरे क्रोध में नहीं था। आपका मतलब बस इतना था कि आप मामले पर किसी तरह के निष्कर्ष या निर्णय पर पहुँच गए हैं”।

इसलिए हमें लगता है कि पुराने नियम में जो कठोरता दिखती है, जो मुख्य रूप से “न्याय” शब्द के बार-बार इस्तेमाल से आती है, वह वास्तव में ‘न्याय’ (**मिशयत**) शब्द के अर्थ की गलतफहमी है। सच्चाई यह है कि ज़्यादातर बार जब बाइबिल में न्याय शब्द आता है, तो इसका मतलब वास्तव में एक बहुत ही खुशी और

मुक्तिदायक लहज़ा होता है।.. लगभग उस तरह से बिल्कुल विपरीत जिस तरह से हमें उन अंशों को देखना सिखाया गया है।

हम पहले ही देख चुके हैं कि प्राचीन इब्रानियों ने मनुष्य की धार्मिकता, सेदेक, को परमेश्वर की नज़र में निष्पक्ष व्यवहार के रूप में देखा, जबकि हम ईसाई इसका अर्थ यह लेते हैं कि हमारे अंदर पवित्रता की भावना है। लेकिन, और कृपया इसे समझें, धार्मिकता के उन विचारों के बारे में इब्रानी और ईसाई दोनों दृष्टिकोण हमारी धार्मिकता, मनुष्य की धार्मिकता के बारे में हैं। अब हमें जो करने की ज़रूरत है वह यह निर्धारित करने की कोशिश करना है कि परमेश्वर की धार्मिकता क्या है। और हम पाते हैं कि हमें परमेश्वर की धार्मिकता को, सबसे बढ़कर, उद्धार के बारे में मानने की ज़रूरत है; यानी, बाइबिल में जब धार्मिकता/सेदेक “परमेश्वर का” है, यह उसकी बचाने वाली इच्छा, उसके बचाने वाले उद्देश्यों और उसके निर्देश पर होने वाली सभी चीज़ों को संदर्भित करता है ताकि वह अपने लिए एक अलग लोगों को बना सके एक बचाए गए लोग, एक पवित्र लोग, एक छुटकारा पाए हुए लोग।

लेकिन, चूँकि धार्मिकता की यह परिभाषा केवल परमेश्वर की धार्मिकता (मनुष्य की नहीं) से संबंधित है। इसलिए परमेश्वर के दृष्टिकोण से जब यह मनुष्यों को संदर्भित करती है, तो धार्मिकता क्या है? खैर, मनुष्य परमेश्वर की उद्धारक इच्छा के उद्देश्य हैं, है न? परमेश्वर की उद्धारक इच्छा हमारे लिए है। यह हम पर निर्देशित है मानव जाति। इसलिए एक धार्मिक व्यक्ति वह है जिसमें परमेश्वर की उद्धारक इच्छा पूरी हो रही है। परमेश्वर की उद्धारक इच्छा उस व्यक्ति में ठीक वैसे ही हो रही है जैसा परमेश्वर ने चाहा था। आज हम कहेंगे, मसीह के बाद से, कि एक धार्मिक व्यक्ति, इसलिए, एक आस्तिक है; जिसने अपने जीवन के लिए परमेश्वर की उद्धारक इच्छा को स्वीकार कर लिया है।

खैर, अगर परमेश्वर की नज़र में धार्मिकता, सेदेक, उद्धार के बारे में है, तो मिशपत क्या है? और, ये दो शब्द, मिशपत और सेदेक, आमतौर पर पवित्रशास्त्र में इतने जुड़े हुए क्यों हैं?

मिशपत परमेश्वर के न्याय की व्यवस्था के तहत परमेश्वर के अनुसार सही और अच्छा क्या है। इसका विस्तृत मानक है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के मिशयत का पालन कर रहा है, तो इसका मतलब है कि वह व्यक्ति परमेश्वर द्वारा अपनी बचत इच्छा के भाग के रूप में निर्धारित सही मानक के अनुसार व्यवहार कर रहा है। याद रखें कि लूथर ने मिशपत का अनुवाद कैसे किया: “परमेश्वर के वचन को बनाए रखना? वह वास्तव में सही था। मेरे लिए इससे एकमात्र अंतर यह है कि मैं लूथर की परिभाषा में “बचाना” शब्द जोड़ूँगा यानी, मिशयत का आम तौर पर मतलब होता है ‘परमेश्वर के बचत वचन को बनाए रखना’।

आइए देखें कि क्या मैं इसे थोड़ा सा स्पष्ट कर सकता हूँ। यशायाह में एक अंश देखें जो स्पष्ट रूप से उद्धार के बारे में बताया गया है, और हम जो सीखे हैं उसे लागू करेंगे।

यशायाह 1:27 पर जाएँ

“सिंघोन का छुटकारा न्याय के द्वारा होगा, और जो मन फिराते हैं उनका छुटकारा धार्मिकता के द्वारा होगा।” कई संस्करणों में ‘न्याय द्वारा मुक्ति’ कहा जाएगा। लेकिन चाहे न्याय हो या निर्णय, यह अंश पूरी तरह से उद्धार के बारे में है। यह परमेश्वर के किसी दंड या क्रोध के बारे में नहीं है।

यहोवा सिंघोन (वैसे, सिंघोन, इस्राएल के लिए ही एक और शब्द है) के लोगों को क्रोध, परमेश्वरीय न्याय भेजकर मुक्ति नहीं देने जा रहा है। इसके बजाय, वह उन पर अपना मिशपात, अपनी बचाने वाली इच्छा, जो कि न्याय का उसका रूप है। लागू करने जा रहा है। और प्रभु की बचाने वाली इच्छा, न्याय का उनका विचार, उनका मिशपात यह है कि मानवजाति उनके विरुद्ध हमारे पापों के लिए उचित दंड का भुगतान नहीं करेगी। बल्कि यहोवा स्वयं, यीशु मसीह के रूप में, मानवजाति के पाप की कीमत चुकाने जा रहा है। यह परमेश्वर का मिशपात है।.. यह परमेश्वर का न्याय का रूप है। यह परमेश्वर की बचाने वाली इच्छा है।

अब इसे समझिए जो तस्वीर बन रही है, उससे पता चलता है कि परमेश्वर की मिशपात, उनका धार्मिक न्याय, उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक उनकी उद्धार करने की इच्छा के बारे में है। और बहुत पहले चर्च ने एक शब्द विकसित किया था, जिससे हम सभी परिचित हैं, जिसका उपयोग परमेश्वर की उद्धार करने की इच्छा को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जो उनके उद्धार करने वाले वचन में प्रकट होती है। और वह शब्द है “सुसमाचार”। मैं इसे फिर से कहता हूँ: “सुसमाचार” शब्द यह है जिसे चर्च ने परमेश्वर के उद्धार के लिए एक शीर्षक के रूप में चुना है। लेकिन “सुसमाचार” जैसा कि हम आज आम तौर पर इसका उपयोग करते हैं, वास्तव में केवल एक ईसाई ध्वनि है क्योंकि अगर मैं आप में से 10 लोगों से कहूँ कि सुसमाचार शब्द का क्या अर्थ है, तो मुझे 10 अलग-अलग उत्तर मिलेंगे, भले ही वे सभी मसीह और उद्धार के इर्द-गिर्द घूमते हों। “सुसमाचार” शब्द की विद्वानों की परिभाषा यह है कि यह “सभी मानव जाति के लिए उद्धार की परमेश्वर की योजना का प्रकट वचन” है। मुझे लगता है कि हम सभी इससे सहमत हो सकते हैं।

इसका निष्कर्ष यह है कि जब **मिशपात** का प्रयोग प्रभु के मिशपात के संदर्भ में किया जाता है (जैसा कि तोरह में होता है) तो यह सुसमाचार के लिए पुराने नियम के शब्द से अधिक या कम कुछ नहीं है। आइए हम इसे एक साथ जोड़कर शुरू करें, यशायाह 42:1-4 को देखकर। यह यीशु के लिए एक स्पष्ट भविष्यसूचक संदर्भ है। अब जब मैं इसे पढ़ रहा हूँ, तो अपनी बाइबिल में मेरे साथ चलें। (पढ़ें)।

ठीक है, आइए इसे फिर से पढ़ें, और जब भी हम न्याय या निर्णय जैसे शब्दों का सामना करते हैं, जो मूल इब्रानी में **मिशपात** है, तो मैं इसके स्थान पर सुसमाचार शब्द का प्रयोग करने जा रहा हूँ, एक ऐसा शब्द जो हमारे लिए जाना-पहचाना है, और एक ऐसा शब्द जो एक ऐसी तस्वीर पेश करता है जिसे हम सभी अच्छी तरह समझते हैं। देखिए क्या होता है। “यह मेरा सेवक है, जिसका मैं समर्थन करता हूँ, मेरा चुना हुआ, जिससे मैं प्रसन्न हूँ। मैंने उस पर अपनी आत्मा डाल दी है, वह गैर-यहूदियों तक सुसमाचार पहुँचाएगा। वह न रोएगा, न चिल्लाएगा; सड़कों पर कोई उसकी आवाज़ नहीं सुनेगा। वह टूटे हुए नरकट को नहीं तोड़ेगा या सुलगती हुई बाती को नहीं बुझाएगा, वह सत्य का सुसमाचार लाएगा। जब तक वह पृथ्वी पर सुसमाचार स्थापित नहीं कर देता, और समुद्रतट उसके तोरह का इंतज़ार नहीं करते, तब तक वह कमज़ोर नहीं होगा या कुचला नहीं जाएगा।”

बहुत ही आश्चर्यजनक है न?

मूसा की वाचा, जिसे इब्रानियों और ईसाइयों ने इतने लंबे समय तक "व्यवस्था" के रूप में गलत तरीके से परिभाषित किया है, वह केवल सुसमाचार की चल रही प्रक्रिया है। हम यह सोचते हैं (क्योंकि पादरी और पादरी हमें यही सोचने के लिए कहते हैं) कि सुसमाचार मसीह के आगमन के साथ शुरू होता है। वास्तव में इसकी घोषणा सबसे पहले मसीह के जन्म के साथ या मूसा की वाचा के साथ नहीं, बल्कि अब्राहम की वाचा के साथ की गई थी। और हमें गलातियों 3.6-8 में इस तथ्य की याद दिलाई गई है: प्रेरित पौलुस की बात सुनिए: "अब्राहम के साथ भी ऐसा ही हुआ उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहा और यही हुआ।

उसके खाते में धार्मिकता के रूप में गिना जाएगा।' तो, आश्वस्त रहें कि यह वे लोग हैं जो भरोसा करके और वफादार रहकर जीते हैं जो वास्तव में अब्राहम की संतान हैं। साथ ही, तनख (पुराना नियम), यह भविष्यवाणी करते हुए कि जब अन्यजातियों पर भरोसा करके और वफादार रहकर जीवन व्यतीत किया जाता है, तो परमेश्वर उन्हें धार्मिक मानेंगे, इसलिए उन्होंने अब्राहम को पहले से ही खुशखबरी (सुसमाचार) बता दी, 'तुम्हारे संबंध में, सभी गोइम (अन्यजाति) धन्य होंगे'।

इसलिए, हमें अपने मन से इस झूठे दुखद गैर-बाइबिल सिद्धांत को दूर करने की आवश्यकता है कि सुसमाचार तब शुरू हुआ जब यीशुआ का जन्म हुआ वास्तव में, यह पहली बार मनुष्य को, विशेष रूप से अब्राहम को, यीशुआ के जन्म से 2000 साल पहले प्रकट किया गया था। अब से मैं आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि जब आप कानून, तोरह के बारे में सोचेंगे तो आप इसे मूल सुसमाचार के रूप में सोयेंगे। पुराना नियम सुसमाचार है, दूसरा नया नियम सुसमाचार है। प्रकाशितवाक्य, येशुआ का दूसरा आगमन और सभी इतिहास का अंत, सुसमाचार का समापन है, सुसमाचार नियम तीन। ओह. यह इस बात पर कितना अलग प्रकाश डालता है कि हम आने वाले महीनों में तोरह के शेष भाग में क्या पढ़ेंगे, और हम परमेश्वर के तोरह को एक कानूनी, कठोर, अनुचित, अप्राप्य कर्म-धार्मिकता और आत्म औचित्य के कोड के रूप में चित्रित करने के लिए कितने दोषी हैं, जिसे समाप्त कर दिया गया है और इसके साथ इसको अनुग्रह में बदल दिया गया है।

लेकिन आज का हमारा अध्ययन, द्वैत की उस अद्भुत और रहस्यमय वास्तविकता की ओर भी संकेत करता है, जिसे हम पूरे धर्मशास्त्र में पाएँगे अर्थात् परमेश्वर की ओर से प्रत्येक निर्देश, चाहे वह पुराना हो या नया, एक ओर तो उसका सांसारिक भौतिक प्रकटीकरण है, और दूसरी ओर समानांतर आध्यात्मिक स्वर्गीय प्रकटीकरण भी है।

प्राचीन इब्रानियों ने अब्राहम और फिर मूसा की वाचा में दिए गए सुसमाचार के प्रकाशितवाक्य को सांसारिक... भौतिक, और इसलिए सभी अनुष्ठान और व्यवहार में लिपटे और पूरी तरह से लौकिक के रूप में देखने की गलती की। हम आधुनिक ईसाई सुसमाचार को लगभग पूरी तरह से स्वर्गीय, आध्यात्मिक के रूप में देखने की गलती करते हैं, जिसमें यहोवा के प्रति हमारी आज्ञाकारिता, उसकी न्याय प्रणाली, उसके मिशपात के प्रति हमारी आज्ञाकारिता की बहुत कम या कोई आवश्यकता नहीं है। सुसमाचार एक या दूसरा नहीं है, यह दोनों है, लेकिन यह आधा-आधा भी नहीं है। मसीह हमारे लिए सुसमाचार के सार का आदर्श उदाहरण था: जैसा कि यीशुआ 100

प्रतिशत मनुष्य और 100 प्रतिशत परमेश्वर है, सुसमाचार 100 प्रतिशत भौतिक और 100 प्रतिशत आध्यात्मिक है। हमें पृथ्वी पर अपने जीवन के समय को अपने साथी मनुष्य के प्रति निष्पक्षता और न्यायसंगत न्याय की अत्यधिक भावना और परमेश्वर की आज्ञा मानने के दृढ़ संकल्प के साथ जीना चाहिए, जैसा कि इब्रानियों ने किया था, लेकिन मसीह द्वारा हमें दी गई अनुचित और आरोपित धार्मिकता की समान रूप से चरम भावना के साथ, और पवित्र आत्मा के निवास द्वारा निर्देशित होने और यहोवा के साथ अनंत जीवन की आशा के साथ, जैसा कि ईसाई समझ है। हमें इस जीवन को महत्वहीन नहीं समझना चाहिए, फिर भी यह अपेक्षाकृत छोटा वर्तमान जीवन, वास्तव में, हमारे भविष्य के आध्यात्मिक अनंत जीवन से पहले है। हमें अपने भौतिक जीवन को एक प्रशिक्षण मैदान के रूप में देखना चाहिए, वह समय जिसके द्वारा हम परमेश्वर के परिपूर्ण, कभी न बदलने वाले, कभी न खत्म होने वाले, सही और न्याय के मार्ग को सीखते और उसका अभ्यास करते हैं। उसका मिश्रित और सेदेक जैसा कि उसके तोरह में बताया गया है। क्योंकि, हम अनंत काल तक सही और न्याय के उसी मार्ग का प्रशासन करने जा रहे हैं। यहाँ तक कि इसे स्वर्गदूतों को भी प्रशासित करेंगे।

आज हमारे अध्ययन का सार यह है: जब हम निर्गमन 21 की पहली पद पढ़ते हैं, तो इसे वैध रूप से इस प्रकार पढ़ा जा सकता है और शायद पढ़ा जाना भी चाहिए, "यही सुसमाचार है जो तुम्हें उनके सामने प्रस्तुत करना है"।